चित्र: तेजी ग्रोवर

तेजी ग्रोवर

मन में खुशी पैदा करने वाले रंग

जब से मैं चित्र बनाने लगी हूँ, सबसे ज़्यादा खुशी तब महसूस हुई जब मैंने हल्दी, अनार के छिलकों और सूखे फूलों से रंग बनाना शुरू किया। होशंगाबाद में नर्मदा नदी के किनारे रहते हुए मुझे समझ में आया कि मैं जो कुछ भी करती हूँ, उसका असर नदी पर होता है। नदी को जितना दुख मैं दूँगी, मुझे उतना ही दुख होगा। बाज़ार में बिकने वाले रंग किस-किस चीज़ के बने हैं, कहाँ से आते हैं, इसकी ठीक-ठीक जानकारी मेरे पास नहीं है। अक्सर ऐसी जानकारी हमसे छिपी रहती है। हमें यह भी बताया जाता है कि बाज़ारी रंग "चिरकाल" तक खराब नहीं होते। पता नहीं इन कम्पनियों को "चिरकाल" का पता कैसे मिला?

जिनमियम, ऑस्ट्रेलिया में रंगीन बिन्दुओं से बना एक "पेट्रोग्लिफ" (चट्टानों को कुरेदकर बनाए चित्र) रंगों के उपयोग का सबसे प्राचीन विवरण है। इसी तरह भीम-बैठका (मध्यप्रदेश) के शैल-चित्र कई हज़ार वर्ष पुराने हैं। बाज़ारी रंग बनाने के दौरान तैयार रंग के साथ-साथ बहुत मात्रा में ज़हरीले पदार्थ भी पैदा हो जाते हैं। इनसे हवा, पानी, मिट्टी और कलाकार सभी को नुकसान पहुँचता है। कुदरती रंगों से चित्र बनाकर मन तो खुश होता ही है, अपने पुरखों की ही तरह हम पृथ्वी की जीवित सुन्दर वस्तुओं की रक्षा भी करते हैं। ये लोग भी तमाम खतरों के बावजूद कभी-कभी तीस-चालीस मील तक रंगों की खोज में भटकते थे। क्या ज़रा-सी मेहनत से हम अपने लिए रंग तैयार नहीं कर सकते?

रंग पिग्मेंट से आता है। और कुछ दुकानों पर प्राकृतिक तत्वों से बने पिग्मेंट पाउडर की शक्ल में मिल जाते हैं। उनसे रंग तैयार किए जा सकते हैं। लेकिन हल्दी और अनार के छिलकों के लिए तो यहाँ-वहाँ भटकना भी नहीं पड़ेगा। यहाँ दिया चित्र मैंने कुदरती रंगों से बनाया है। कुदरती रंग बनाना मैंने अपने मित्र चित्रकार सिद्धार्थ से सीखा। सिद्धार्थ ने कुदरती रंगों पर जीवन भर काम किया है।

अगले अंकों में हम और कई रंगों की चर्चा करेंगे, जैसे फूलों, पत्तों आदि से रंग बनाना। फिलहाल ये दो विधियाँ:

1. अनार के छिलकों को लोहे के बर्तन में कम आँच पर 15-20 मिनट तक उबालकर छान लो। रंग तैयार है।
2. छिलकों को छाने बिना चम्मच से निकालकर इसमें बबूल की गोंद मिला दो। दानेदार रंग बन जाएगा।
3. उबालने के बाद छिलकों को रात भर बर्तन में ही पड़ा रहने दो तो रंग लगभग काला हो जाएगा।

भीम-बैठका के दो शैल चित्र (साभार - द रॉक आर्ट हैरीटेज और रॉक आर्ट इन द ओल्ड वर्ल्ड)

1. दो-तीन चम्मच हल्दी पाउडर को चार-पाँच चुटकी फिटकरी के साथ 5-6 मिनट तक उबालने पर नींबुई पीला रंग मिलेगा। इसे छानकर या बिना छाने गोंद मिलाकर इस्तेमाल किया जा सकता है।
2. फिटकरी की जगह खाने का सोडा डालने पर रंग गहरा और गाढ़ा हो जाता है – ऑकर और सिएना के बीच का।

अगले अंक में सूखे फूलों से रंग बनाना सीखेंगे...। ताज़े फूल तो तितलियों, फुलचुकियों और मधुमक्खियों के लिए कहीं ज़्यादा ज़रूरी हैं।

देखिए, ऊँट किस करवट बैठता है

किसी कुम्हार और कुँजड़े ने एक ऊँट किराए पर लिया। एक ओर कुम्हार ने अपने मिट्टी के बर्तन लादे और दूसरी ओर कुँजड़े ने अपनी शाक-भाजी। रास्ते में ऊँट ने कुँजड़े की शाक-भाजी पर मुँह मारना शुरू कर दिया। यह देखकर कुम्हार खुश हुआ कि उसका कुछ नुकसान नहीं हो सकता। इस पर कुँजड़े ने कहा, "घबराओ नहीं! देखें कि ऊँट किस करवट बैठता है।" जब ठिकाने पर पहुँचे तो ऊँट उसी करवट बैठ गया, जिधर कुम्हार के बर्तन रखे थे।

साभार: इंडिया